Q.2→ Explain the Economic Views of GANDHI?

Ans:- मोहनदाकरमचन्द गांधी का जन्म एक ऐसे समय में हुआ जबकि राष्ट्रीय आन्दोलन शक्ति प्राप्त कर रहा था किन्तु गांधी के पदार्पण ने उसके रूप एवं दिशा को ही बदल दिया। गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई में पोरबन्दर में हुआ था। 1887 ई0 में ये कानून की शिक्षा प्राप्त करने इंगलैण्ड गये। 1891 ई० में उन्होंने बकालत आरंभ की। सन 1893 से 1914 तक गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में रहे और जातीय भेदभाव, भेदभाव खत्म करने के लिए कार्य करते रहें। गांधी जी के सत्याग्रह से दक्षिण अफ्रीका में उनके विरोधियों के मन में भी प्रशंसा उत्पन्न हो गई। सन 1915 में गाँधी जी वापस आये और 1920 में उन्होंने असहयोग आन्दोलन आरंभ किया। सन 1930 में नमक सत्याग्रह तथा दाण्डी मार्च का नेतृत्व किये।- सन 1940 में उन्होंने सिविल डिसमोबीडियेन्स मूवमेण्ट और सन 1992 में भारत छोडो आन्दोलन आरंभ किये। 30 जनवरी 1948 को गोली लगने कारण गांधी जी की मृत्यु हो गयी।

महात्मा गांधी के आर्थिक विचार सत्य एवं अहिंसा से प्रेरित है, जिनमें सैद्धांतिकता की अपेक्षा व्यवहारिकता का अधिक पुट है। पश्चिमी भौतिवाद तथा उनके आर्थिक विचारों में बहुत अन्तर है। मॉल, पीशू तथा रॉबिन्स आदि ने यौकि समृद्धि 11 को मनुष्य के कल्याण का एकमात्र साधन स्वीकार किया है। इसके विपरीत, गांधी जी ने भौतिकता की अधिक महत्व प्रदान नही किया है। उनके अनुसार आध्यात्मिक सुख ही परम सुख होता है। उनके अनुसार आचालिक अनुयायिओ के आर्थिक विचारों को डा० जे० सी० कुमारप्पा एवं अन्य विद्वान ने संकलित किया है जो गांधीवादी अर्थशास्त्र के नाम से जाना जाता है। इनमें मुख्य The Economy of Permanente, The Whitting unitary Basis for Non Violent democracy, Why 1. The village monument? Gandhian Economic Thought The Gandhian way of life और the Gandhian Economic है।

गंधीजी के आर्थिक विचारों पर अनेक पुस्तक प्रकाशित हुए है जिनमें स्वयं गांधीजी ने लिखी जिनमें हम उनके विचारों को ज्ञात कर सकते है। इनकी रचनाओं में – The constructive programme Tour The Economic of khadi, Hindi Swaraj, Sarvodaya, Towns Non-violent Socialism और अनेक लेख जो Young India और Harijan में प्रकाशित हुए

गांधी जी के आर्थिक विचार :

गांधीजी आर्थिक विचारों की किसी भी निश्चित योजना में विश्वास नहीं करते थे। उनके आर्थिक विचार उनकी रचनाओं तथा उनके भाषणों में इधर-उधर बिखरे हुए मिलते है। वे अर्थशास्त्र को जीवन का एक अंग समझते थे, इसलिए उनके आर्थिक विचार उनके सामान्य जीवन दर्शन का ही एक भाग है। गांधी जी के आर्थिक विचार चार मूला सिद्धांतों पर आधारित चे:-

(1) सत्य

2. अहिंसा

3. श्रम की महानता और कि सरलता।

इन सिद्धांतों पर आधारित थे।

प्रो० हक्सले के शब्दो में: → गांधीजी कें सामाजिक एवं आर्थिक विचार मनुष्य के स्वभाव तथा इस जगत में उसके अस्तित्व के स्वभाव के वास्तविक मूल्यांकन पर आधारित हैं। उसको मालूम था कि अप्रगतिशील संगठन और उत्पतिशील तकनीक की सफलताएँ एवं इस - मौलिक तथ्य को नहीं बदल सकती कि मनुष्य एक बड़े आएर वाला जानवर नहीं है और अधिक मामूली योग्यता वाला प्राणी है।"

गांधी जी के जीवन में सबसे अधिक महत्व (सरल - जीवन तथा उच्च विचार" सम्बन्धी सिद्धांत का रहा है। गांधीजी ने इस सिद्धांत को राष्ट्र हित में अपनाया। गांधीजी ने कहा कि सुख 'और संतुष्टि दो मानसिक परिस्थितियाँ है और आवश्यकताओं की वृद्धि की कोई सीमा नहीं है। गांधीजी ने लिखा है कि : → 'हम देखते है कि मस्तिष्क एक व्याकूल पक्षी है, जितना अधिक इसे मिलता है उतना ही अधिक यह चाहता है और फिर भी यह असंतुष्ट रहता है।"

गांधीजी अहिंसा के पुजारी थे। इसलिए अके आर्थिक विचारों को अहिंसा का अर्थशास्त्र कहते है। अहिंसा का सिद्धांत उनके दर्शन की आत्मा है। गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को 8 घंटे काम कसा चाहिए, 8 घंटे फुरसत में रहना चाहिए और 8 घंटा सोना चाहिए। फुरसत के आठ घंटों में उसे किसी न किसी प्रकार का सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य करना चाहिए। गांधीजी ने आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तियों एवं संस्थाओं के पथ प्रदर्शन के लिए कुछ, मौलिक सिद्धांत प्रतिपादित किये थे। ये सिद्धांते निम्न प्रकार है।

(क) गांधीजी अपरिग्रह तथा निःस्वार्थ एवं विभिन प्रकार की असमानताओं के विश्वस के पक्षपाती थे। उनके अनुसार यदि किसी व्यक्ति को उत्तराधिकारी में बड़ी सम्पति प्राप्त हुई है या किसी ने व्यापार एवं उद्योग के लाभ से बड़ी मात्रा में धन एकत्र किया है तो सम्पूर्ण सम्पति नहीं वरन सारे समाज की है। वास्तव में जिसे व्यक्ति ने उस सम्पति का संचय किया है वह केवल उतने ही हिस्से का. अधिकारी है जो उसको सम्मानपूर्वक जीवन उसका, कतीत करने के लिए आवश्यक है। उस संचित धन का शेष भाग सम्पूर्ण राष्ट्र का है और सभी कल्याण पर खर्च होना चाहिए। उनका वास्तविक उद्देश्य पूंजीपतियों को सुधारना था और उनको यह बताया था कि जिस घन को उन्होंने एकत्रित किया है वे उसके अधिकारी नही है. वस उनके नातेदारी (Trutee) है। बेद पातेदारी स गांधीजी का आशय यह था कि सभी सामाजिक सम्पति थाल्दाटी के अन्तर्गत रहनी चाहिए। उनको नातेदारी सिद्धांत में इतना अधिक विश्वास था कि वे यह समझते थे कि इसकी सहायता से भूमि पर समानता की स्थिति हो जाएंगी। गांधी जी है अपग्रहित मंत्र के निम्न उदेश्य थे।

1) नातेदारी एक साधन है। जिसकी सहायता से वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित समाज को समय समतापूर्ण सामाजिक अवस्था में बदलाब जा सकता है।

(2) यह सिद्धांत किसी भी प्रकार की सम्पत्ति के नीजी स्वामित्व को मान्यता नहीं देता। केवल उस समय तक स्वामित्व का अधिकार प्रदान किया जायेगा जिस सीमा तक समाज सबके कल्याण को देखते हुए स्वामित्व की स्वीकृति देगा।

3.) यह सिद्धांत धप के उपयोग एवं स्वामित्व के वैज्ञानिक नियम की अवहेलना नहीं करता।

4.) राज्य द्वारा नियंत्रित नातेदारी में किसी भी. जक्ति को अपने स्वार्थ में धन का उपयोग करने की स्वतंत्रा नहीं होती।

5) उत्पादन का स्वभाव व्यक्तिगत लाभ एवं विचाहों से निश्चित न होकर सामाजिक आवश्यकता से निर्धारित (ख) औद्योगिकरण गांधीजी बड़े पैमाने पर औधोगीकरण के कट्टर विरोधी थे। उनका विश्वास था कि बड़े पैमाने के उत्पादन से ही सामाजिक एवं आर्थिक दोष उत्पन्न हुई है। नगर की जलवायु को दूषित कर देती है तथा आर्थिक संकटों बढ़ावा देती है। गांधी जी ने यंत्रों की तुलना साँपों के बिलों से की है तथा आधुनिक सभ्यता को शैतानों की सभ्यता की संज्ञा प्रदान की है। उनके विचारानुसार मशीनों के प्रयोग से अनेक श्रमिक बेकार हो जाते है। वास्तव में गाँधीजी मशीनों के विरुध नहीं थे, अधिक मशीनों के बढ़ते हुये प्रयोग की प्रवृति के विरोध थे। अनेक व्यक्तियों ने गांधीजी को मावुक बताया है किन्तु खादी योजना की ही अध धर्म था। गांधीजी की इस योजना मेचे कार्यक्रम सम्मिलित

(1) समी-प्राक्ष -प्राइमरी और सेकेण्डरी स्कूलों में अनिवार्य रूप कताई की शिक्षा देना। हो रही है। उन क्षेत्रों में कपास की खेती करना जहाँ अब तक नहीं

(3.) बहुदेशिये सरकारी समितियों द्वारा कपडे की बुनाई की व्यवस्था

(4) सरकारी तथा शिक्षा विभागों, नगर पालिकाओं एवं जिला बोर्ड और ग्राम पंचायतों के सभी कर्मचारियों को सूत-कताई ही परीक्षा में उतीर्ण होना चाहिए वर्ना उनको अयोग्य घोषित कर दिया जायेगा।

(5) मिल द्वारा बनाये हुए भूत से रचकरथे पर वो हुए कपडे के मूल्य को नियंत्रित किया जाये।

(6.) विदेशी सूत अथवा कपडे के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिये जायें।

4 (ग) विकेन्द्रीकरण → केन्द्रीयकरण से अभिप्राय एक ही प्रकार के उद्योगों के एक ही स्थान विशेष पर केन्द्रित हो जाने से हैं तथा विकेन्द्रीयकरण से तात्पर्य है किसी उद्योग विशेष की अनेक इकाइयों की स्थापना किसी एक स्थान विशेष पर न होकर विभिन्न क्षेत्र में हो। गांधी जी ने उद्योगों में केन्द्रीयकरण है दोषों

स्वयं देखा था। उनके मतानुसार विशाल स्तर के उत्पादन । सहदेवाजी तथा धोखेबाजी की प्रकृति को प्रोत्साहन प्राप्त होता है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था का आधार हिंसा एवं शोषण हो जाता है निगरों में जनसंख्या का आधिक हो जाने पर जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाता है जिसके परिणाम स्वरूप श्रमिको का नैतिक पतन होने लगता है। श्रमिकों में शराब पीने, वेश्यावृति जुआ खेलने जैसे अनेक सामाजिक दोष उत्पन्न हो जाते है। इस प्रकार गांधीजी उद्योगो के केन्द्रीयकरण के एकदम विरुद्ध थे।

ग्रामीण सर्वोदय गांधीजी के शब्दों में "मेरा विश्वास है कि और मैंने इस बात को असंख्य बार दोहराया है कि भारत अपने चंद शहरों में नहीं बल्कि साह लाख गांवों में बसा हुआ है। लेकिन हम शहरवासियों का ख्याल है कि भारत शहरों में है और गांवों का निर्माण शहरों है जरूरतें पूरी करने के लिए हुआ है। हमने कभी यह सोचने की तकलीफ ही नहीं उठाई कि उन गरीबों को पेट, जितना अल और सदीर ढकने जितना कपडा मिलता है या नहीं और धूप तथा वर्षा से बचते । लिए उनके सिर पर छप्पर है, पा "नहीं। ग्रामीण सर्वोदय से अका अर्थ एक आदर्श ग्राम संचा जिसमे निम्न बातो का होना आवश्यक है।→

(1) ग्रांम का ढांचा व्यवस्थित होना चाहिए। (2) वहाँ पर फलों के पेड़ होने चाहिए।

3) एक धर्मशाला और एक छोटा अस्पताल होना चाहिए। - उचको भोजन तथा कपड़ा में स्वालम्बी होना चाहिए। जिसको तथा गलियों क] स्वच्छ रखना चाहिए।

6) पूजा घटों की स्वच्छ तथा सुन्दर होना चाहिए। मिहर गलि में पानी की निकासी ।। प्रबन्ध होना चाहिए। छिग्रामों में डाइयों तथा जंगली पशुओं से सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध होना चाहिए।

शिवानी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

(किग्रामीण प्रशासन एवं व्यवस्था पंचायतों द्वारा की जाए। जाति प्रथा का अन्तर होना चाहिए।

खाद्य समस्या : → सन् 1943-94 में गांधीजी ने अपने जीवन का सबसे भीषण अकाल देखा था। उस वर्ष अनाज के अभाव के कारण बंगाल को बहुत अधिक हानि हुई। प्रारंभ में गांधीजी । विचार था कि आज की कमी मुख्यतः मनुष्यकृत थी किन्तु बाद में जब मद्रास, बंगाल और असाम का दौर किया तो उनको ज्ञात हुआ कि अनाज को अनाज का उपयोग कम से करना चाहिए और दालों के उपयोग हो कम करके 1 सब्जियों, फलो और दूध के उपयोग, हैं। अधिक कसा चाहिए। उन्होंने खाध समस्या को सुलझाने के लिए निय उपाय बताये थे:- 1 प्रत्येक बाग 6 खेती मे परिगत दिया जाये (2) फौजों द्वारा खाध एवं दातो है उपयोग ये भी की जाय (3) अनाज की चोरी-बाजारी को रोका जाय (क) सरकार है। चाहिए कि सिंचाई सुविधा प्रदान करे। 5) तिलन, खाल इत्यादि के निर्माण को बन्द किया जायें। गांधी जी खाच नियंत्रण कर के विरुद्ध थे क्योंकि अका विचार था कि इससे बनावटी कभी उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति दूसरे पर निर्भर हो जाते है। इसलिए उन्होंने नवम्बर 1947 में भारत सरकार से खाच-नियंत्रण का अंत करने का आग्रह किया था।

(च) जनसंख्या: गांधीजी के अनुसार अधिक जनसंख्या देश के लिए हानिकारक होती है। किसी देश में उसी ही जनसंख्या होनी चाहिए जितनी का वह देश सरलता से पालन-पोषण कर सके। उनके अनुसार जनसंख्या में वृद्धि भी उसी अनुपात में होना चाहिए जिस अनुपात ये कि खाच- पदाची का वृद्धि होती है।

(६.) मधसम्ब निषेध :- गांधीजी के अनुसार कॉफी, चाय तम्बाइ और मदिरा का उपयोग व्यक्ति के मानसिक शारिरिक एवं नैतिक विकास के लिए हानिकारक होता है। वह मदिरा को एक प्रकार का रोग समझते थे। परंतु डाक्टर की सलाह पर मदिरा के विरुद्ध नहीं थे। एक कूलेख में उन्होंने लिखा था कि : त्र्यदि उन्हें एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर नियुक्त कर दिया जाये तो सबसे " पहले वह बिना सुभावजा दिये मंदिरा की सब दुकानों को बन्द करवा देगे और मालिको को कर्मचारियों के लिए बिना हानि वाले पेचों की व्यवस्था करने के लिए जलपान गृह स्थापित विवस करने के लिए विवश करेंगे।" उहोने इसके लिए जो उपाय दिये 'चे वेइस प्रकार है : → 2 जनमत शिक्षित किया जाये बिना हानि वाले पेपों के विक्रय के लिए जलपान गृह स्थापित किये जाये।

(ड) नशीली वस्तुओं या मादक पेय के विक्रय से जो आप प्राप्त

उसका उपयोग जनमत शिक्षित के लिये किया जाय।

(ज) आर्थिक स्वतंत्रता : → गांधी जी राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ- साथ आर्थिक स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। प्रत्येक व्यक्ति है। स्वतंत्रता प्रदान कसे के पक्ष में थे। उनके अनुसार जब तक व्यक्ति है। स्वतंत्रत नहीं प्रदान की जाती है तब तक उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है। गांधी जी के शब्दों में "व्यक्ति सर्वोच्च विचारणीय है। राज्य की बढ़ती हुई शक्ति को मै भय के साथ मुट्टष्टि से देखता है यद्धपि राज्य शोषण को कम करके अच्छा ही करता है, किन्तु क्योकि व्यक्ति को नष्ट करके मानवता की हानि पहुँचाती है तथा यह व्यक्तित्व की विकास की जड़े है।